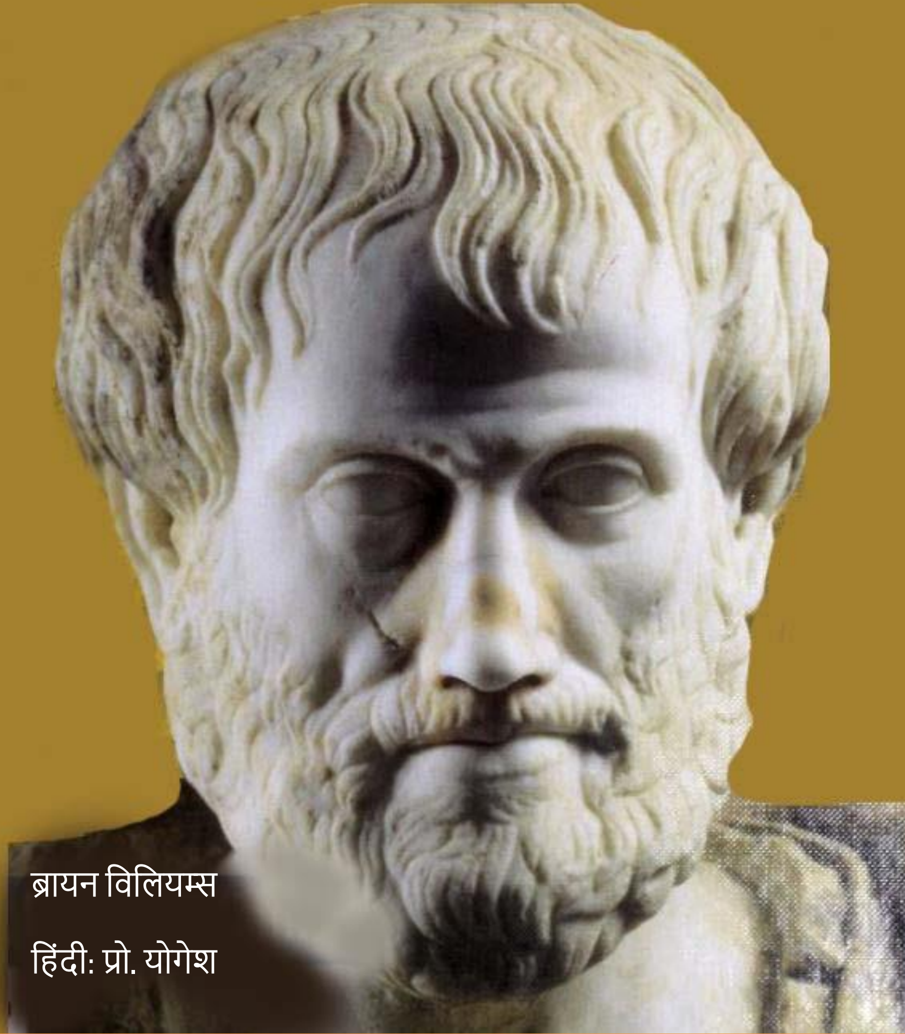
अरस्तु



ब्रायन विलियम्स

हिंदी: प्रो. योगेश

अरस्तु

ब्रायन विलियम्स

हिंदी: प्रो. योगेश

क्रमणिका

देवताओं और विचारकों की धरती

यूनान देश के अरस्तु कदाचित विश्व के महानतम विचारकों में एक थे। यद्यपि उनका जन्म २३०० वर्ष पूर्व हुआ था, उनके विचार आज भी बहुचर्चित हैं। अरस्तु और उसके विचारों ने पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति पर गहरा प्रभाव छोड़ा है।

अरस्तु प्राचीन यूनान के सर्वाधिक महत्वपूर्ण दार्शनिकों में से एक थे। यूनान के दार्शनिक कुछ ऐसे प्रश्नों पर विचार करते थे : "सत्य क्या है?" और "कौन सी सत्ता प्रणाली सर्वोत्तम है?" इत्यादि। अरस्तु कदाचित पहले ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने पशुओं और पौधों का नज़दीकी से अध्ययन किया, लेकिन वह कला, धर्म, सत्ता-प्रणाली जैसे विषयों में भी बहुत रूचि रखते थे। साथ ही वह एक शिक्षक भी थे। उनके सबसे प्रमुख और प्रख्यात शिष्य थे सिकंदर महान, जो इतिहास के महानतम विश्व विजेता माने जाते हैं।

क्योंकि यूनान में उपजाऊ भूमि का अभाव था, इसलिए बहुत से लोग जाकर अन्य उपनिवेशों में बस गए। इस प्रकार यूनान की विचारधारा का प्रचार-प्रसार उत्तरी अफ्रीका, इटली और स्पेन तक हो गया।

अरस्तु ने अनेक वर्ष एथेंस नगर में व्यतीत किये, जो कि अपने राज-नेताओं, लेखकों और शिक्षकों के लिए प्रख्यात था। उसने यूनानी भाषा में लेखन किया, लेकिन बाद में उसके लेखन का अनुवाद अन्य भाषाओँ में हुआ और अनेक देशों में उसे पढ़ा गया। सैकड़ों वर्षों तक लोग मानते थे कि हर विषय पर अरस्तु के विचार सही थे। लेकिन आधुनिक विज्ञान ने दर्शाया कि एक वैज्ञानिक के तौर पर अरस्तु हमेशा सही नहीं था। फिर भी, वह इतने सारे महत्वपूर्ण विचार छोड़ कर गया कि लोग अभी भी उसके विचारों को पढ़ने और जानने में रूचि रखते हैं।



यूनान एक प्रायद्वीप है, यानि तीन ओर से समुद्र से घिरा भूभाग, जो कि अनेक छोटे-छोटे द्वीपों से घिरा हो। अरस्तु का जन्म उत्तरी यूनान के स्तागिरा में हुआ था, लेकिन उसका अधिकांश जीवन एथेंस, एशिया माइनर, और लेस्बोस में बीता। उसकी मृत्यु चालसिस नगर में हुई।

अरस्तु का यूनान

लोकतंत्र, यानि जनता द्वारा शासन की प्रणाली, जो कि आज अनेक देशों में प्रचलित है, की जन्मभूमि अरस्तु का यूनान ही थी। प्राचीन यूनान अनेकों छोटे नगर-राज्यों का समूह था। प्रत्येक नगर-राज्य की अलग सरकार होती थी, जो आस-पास के गांवों, खेतों और बंदरगाहों का प्रशासन देखती थी। यूनान में अनेकों देवताओं को पूजा जाता था। हर नगर में इन देवताओं के मंदिर होते थे, और लोगों का विश्वास था कि ओलम्पस पर्वत पर आसीन ये देवता यूनान की देख-रेख करते हैं।

यूनान के मूर्तिकार प्रसिद्ध लोगों की अर्ध-प्रतिमाएं बनाया करते थे। यह अरस्तु की ऐसी ही एक अर्ध-प्रतिमा है।

प्रमुख तारीखें

३८४ ई.पू.	अरस्तु का जन्म
३६७ ई.पू.	प्लेटो के साथ अध्ययन हेतु अरस्तु की एथेंस यात्रा
३४४ ई.पू.	लेस्बोस द्वीप पर अरस्तु द्वारा प्रकृति का अध्ययन
३३६ ई.पू.	सिकंदर का यूनान के शासक का पद-ग्रहण
३३५ ई.पू.	अरस्तु द्वारा एथेंस में लाइसियम की स्थापना
३२२ ई.पू.	अरस्तु का निधन

एक चिकित्सक का पुत्र

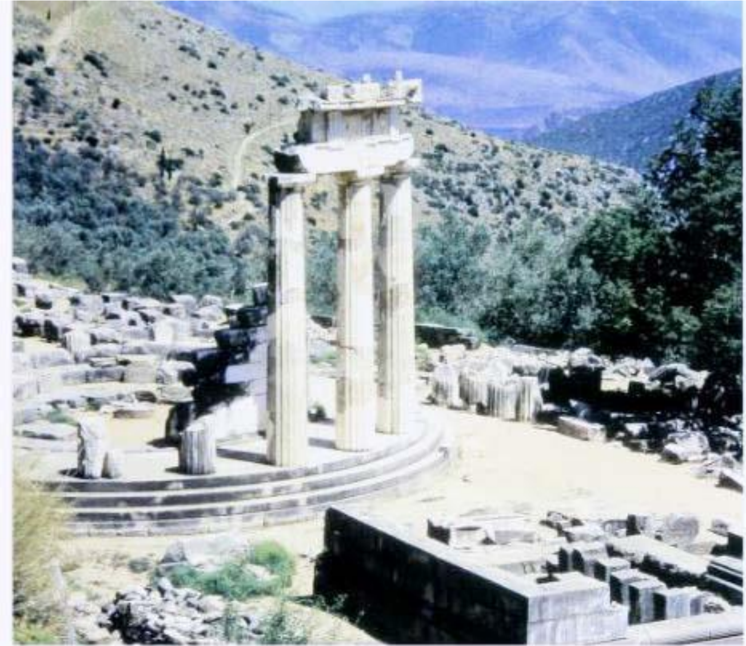
अरस्तु का जन्म ३८४ ई. पू. में स्तागिरा नाम के छोटे नगर में हुआ था, जो एजियन सागर के उत्तर-पश्चिमी तट पर बसा था। अरस्तु की माँ यूबोआ द्वीप के चालसिस नगर से थी। उसके पिता निकोमाचस एक चिकित्सक थे और उत्तरी यूनान के मैसेडोनिया राज्य के राजा अमिनतास द्वितीय के दरबार में शाही चिकित्सक के पद पर नियुक्त थे।

पुत्र का स्वागत

अन्य पिताओं की भांति निकोमाचस को भी बहुत प्रसन्नता हुई। अरस्तु के जन्म के सात दिन बाद एक विशाल भोज का आयोजन हुआ। जैतून की पत्तियों के बन्दनवारों से घर को सजाया गया, और मित्र व सम्बन्धी भेंट ले कर आये। निकोमाचस ने मंदिर जाकर पुत्र-प्राप्ति के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया।

अरस्तु का गृह-नगर

अन्य यूनानी नगरों की ही भांति स्तागिरा में भी एक बड़ा खुला मैदान था, जिसे अगोरा कहा जाता था। इसका उपयोग बाजार लगाने या जन सभाएं आयोजित करने के लिए होता था। इस मैदान के चारों ओर लाल रंग की ईंटों से बने छोटे-छोटे घर थे, और लकड़ी व पत्थर से बने सुन्दर मंदिर भी थे। निकोमाचस इस छोटे से नगर का एक प्रमुख सम्मानित नागरिक था।



प्रत्येक यूनानी नगर में कम से कम एक मंदिर अवश्य होता था, जहाँ लोग देवताओं के लिए भेंट व चढ़ावा छोड़ जाते थे। यह चित्र डेल्फी नगर के देवी एथेना के मंदिर के अवशेषों को दर्शाता है।



यूनान में एक दीवार पर उकेरी गई यह मूर्ति स्वास्थ्य व उपचार के देवता एस्क्लेपियस को दर्शाती है, जो एक व्यक्ति की बांह पर लगे घाव का उपचार कर रहा है।

यूनान में चिकित्सा प्रणाली

यूनान के चिकित्सक दवाइयों के अलावा जादू-टोना का भी इस्तेमाल करते थे। उपचार के देवता का नाम था एस्क्लेपियस। जब लोग या उनके सम्बन्धी बीमार पड़ते तो वे इसी देवता की प्रार्थना करते थे। निकोमाचस शायद अपने मरीज़ों को जड़ी-बूटियों से बनी दवाएं देता था, और उनकी शल्य चिकित्सा भी करता था, लेकिन बिना किसी दर्द-निवारक दवाई के। कदाचित उसे हिप्पोक्रेटस नाम के प्रसिद्ध चिकित्सक के नए विचारों का भी ज्ञान था, जो शारीरिक संरचना और कार्य प्रणाली के ज्ञान पर आधारित चिकित्सा में विश्वास रखता था।

बेटे और बेटियां

यूनान के पिता पुत्र के जन्म के बड़े इच्छुक होते थे। बेटा बड़ा होकर एक नागरिक बनेगा, परिवार की संपत्ति का वारिस बनेगा, और वृद्धावस्था में माता-पिता की देख-रेख करेगा। एक बेटी यह सब नहीं कर सकती थी, क्योंकि यूनान में महिलाओं को पुरुषों जैसी स्वतंत्रता और अधिकार प्राप्त नहीं थे।

अरस्तु का बचपन

निकोमाचस काफी धनी था, अरस्तु की माँ के पास कई नौकर-चाकर, दास व दाइयां थीं, जो उसके नन्हे बेटे का खयाल रखती थीं। इन गरीब नौकरानियों को अक्सर बाहर जाकर खाना पकाने के लिए कोयला, व कुँए से पानी लाना पड़ता था, और मां अधिकांश समय घर पर ही रहती थी। एक धनी महिला होने के नाते वह गृहस्थी की देख-रेख करती, नौकरों को आदेश देती, और सुनिश्चित करती कि परिवार में सभी के लिए कपडे व अन्य वस्तुएं सुलभ हों। उसका अधिकांश समय चरखा चलाने और कपडा बुनने में जाता था। केवल मंदिर जाने, या केश सज्जा करवाने के लिए ही वह घर से बाहर निकलती थी, या फिर किसी सहेली से मिलने के लिए। जब वह बाहर जाती तो प्रायः कोई दास उसके साथ जाता था। उसके पति किराना आदि के लिए बाजार में सन्देश भिजवा देते, और सामान घर पहुंचा दिया जाता था। जब निकोमाचस राजमहल में किसी दावत में जाते, तो उनकी पत्नी घर पर ही रहती थीं। सम्मानित महिलाएं ऐसी सभाओं में नहीं जाया करती थीं।

एक राजकुमार से मुलाकात

जब अरस्तु तीन वर्ष का हुआ तो उसके माता-पिता ने प्रार्थना और विशेष भोजन के साथ उसका जन्म-दिन मनाया। छोटे बच्चों को भेंट में खिलौने दिए गए। पांच वर्ष का होते होते अरस्तु के लिए एक शिक्षक भी नियुक्त कर दिया गया। वह शिक्षक कदाचित एक शिक्षित दास रहा होगा जिसने अरस्तु को यूनानी अक्षरमाला सिखाई होगी।

जब अरस्तु कुछ बड़ा हुआ तो उसके पिता उसे राजा के दरबार में ले जाने लगे। राजा अमिनटस के तीन पुत्र थे, जिनमे सबसे छोटा, फिलिप, अरस्तु से केवल दो वर्ष छोटा था। वह योद्धा बनने की शिक्षा प्राप्त कर रहा था।

एथेंस और स्पार्टा

यूनान के नगरों में एथेंस सबसे धनी और कला व संस्कृति का केंद्र था, जबकि स्पार्टा अपने योद्धाओं और युद्ध-कला के लिए जाना जाता था। स्पार्टा के लोग अपने बच्चों को योद्धा बनने का प्रशिक्षण देते थे। एथेंस के पास यूनान की सर्वश्रेष्ठ नौसेना थी, लेकिन वहां के नेता व्याख्यान देने के लिए भी उतने ही प्रसिद्ध थे जितने युद्ध-कौशल के लिए। एथेंस के नागरिक लोकतंत्र के द्वारा स्वयं ही शासन चलाते थे। लेकिन स्पार्टा के लोगों को लोकतंत्र जैसे नए विचार नापसंद थे, और वहां का शासन कुछ चुनिंदा योद्धा-सरदारों का समूह चलाता था। स्पार्टा की महिलाएं घरों की मालकिन हो सकती थीं, लेकिन एथेंस में ऐसा नहीं था।



यूनानी अक्षरमाला में २७ अक्षर थे, जिनमे से कुछ आज की अंग्रेजी भाषा के अक्षरों जैसे ही थे।



यूनान के बच्चों के पास अनेक खिलोने होते थे, जो आजकल के कुछ खिलौनों से मिलते-जुलते थे। उनके गुड्डे-गुड़ियों के हाथ-पैर हिल-डुल सकते थे।

बच्चों के खिलौने

यूनान के बच्चे अपना अधिकांश समय घर से बाहर खेलने में व्यतीत करते थे। वे पतंगें उड़ाते, पांसों से लूडो जैसे खेल खेलते, और लकड़ी या मिटटी से बने रंगीन गुड्डों से खेलते, जिनके हाथ-पैर हिलने-डुलने वाले होते थे। नन्हे बच्चे दूध पीने के लिए मिटटी के बने गिलास व बैठने की कुर्सी का उपयोग करते थे, जो आजकल की प्लास्टिक की कुर्सियों और गिलासों जैसे ही होते थे।

पारिवारिक जीवन

अरस्तु ने अपने बचपन के बारे में कोई जानकारी नहीं छोड़ी है। इतिहासकारों और पुरातत्ववेत्ताओं ने प्रचीन यूनान के बारे में जो कुछ खोज की है, उसी के आधार पर हम अरस्तु के बचपन के बारे में कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

एक यूनानी घर

अरस्तु का घर संभवतः उस समय के अन्य घरों की भांति पत्थर, ईंट और लकड़ी का बना होगा, और उसकी छत खपरैल की रही होगी। पुरातन यूनान के घरों में बाहरी दीवारों पर प्रायः बहुत कम खिड़कियां होती थीं, लेकिन घर के अंदर एक आँगन ज़रूर होता था। घर में पुरुष और महिलाओं के अलग-अलग कमरे होते थे। अरस्तु शायद बान की बुनी चारपाई पर सोता होगा। उसके कुछ कपडे और खिलौने किसी डलिया या लकड़ी की संदूकची में रखे जाते होंगे।

पशु-प्रेमी अरस्तु

बहुत से यूनानी बच्चों को कुत्ता, बिल्ली, चिड़िया, कछुआ या अन्य जानवर पालने का शौक होता था। यहाँ तक कि कुछ तो सांप और छिपकली भी पालते थे। अरस्तु के पास भी अवश्य पालतू जानवर रहे होंगे, क्योंकि उसे प्रकृति से बहुत प्रेम था।



इस यूनानी फूलदान पर अंकित चित्र में जैतून की खेती दिखाई गई है। हाथों में लम्बी छड़ियाँ लेकर लोग जैतून के पेड़ की टहनियों पर वार कर रहे हैं, ताकि जैतून के फल टूट कर धरती पर आ गिरें।



एक यूनानी महिला ने मलमल का लम्बा वस्त्र पहना हुआ है, जिसे "चीटोन" कहा जाता था, और उसने "हिमेशन" नामक वस्त्र से सर को ढका हुआ है। घर से बाहर वे ऐसे ही वस्त्र धारण करती थीं।

पहनावा

बचपन में अरस्तु अवश्य ही एक चोगा-नुमा पोषाक पहनता होगा, और नंगे पाँव घूमता होगा। किशोरावस्था में वे ऊन या मलमल के बने कुछ छोटे चोगे पहनते थे। वयस्क लोग घुटनों तक ऊंचा चोगा और ऊपर "हिमेशन" नामक वस्त्र पहनते थे। दास और कर्मचारी प्रायः केवल लंगोटी पहनते थे।

अधिकांश यूनानी किसानी का काम करते थे। वे रोटी बनाने के लिए बाजरा और गेहूं उगाते थे, और मदिरा बनाने के लिए अंगूर। इसके अलावा वे जैतून की खेती भी करते थे, जिसे खाया भी जाता था, और जिसका तेल भी निकाला जाता था। इस तेल का प्रयोग खाना बनाने के अलावा रात में दिए जलाने के लिए भी होता था। वे मछली पकड़ने का काम भी करते थे।

भोजन का समय

नाश्ते में शायद अरस्तु दूध या शराब में भीगी हुई रोटी खाता होगा। दोपहर के भोजन में पनीर और रोटी के साथ जैतून के फल, अंगूर या अंजीर। शाम के भोजन में लोग जौ का दलिया खाते थे, सेम, पत्तागोभी, गाजर, प्याज जैसी सब्ज़ियों के साथ, और शायद कभी कभी मछली भी। अधिकांश यूनानी कुछ विशेष त्योहारों पर ही मांसाहार करते थे।

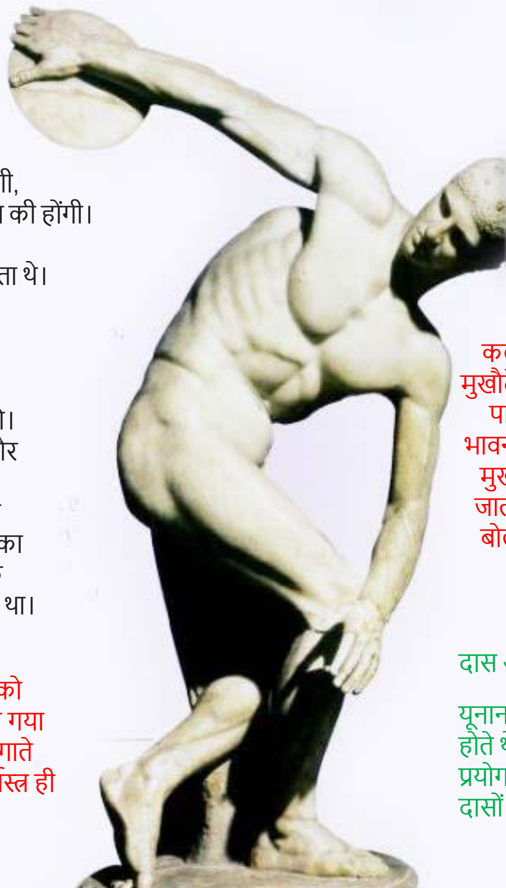
पाठशाला का जीवन

अरस्तु ने विज्ञान और चिकित्सा की शुरूआती शिक्षा अपने पिता से ही पाई होगी। लगभग सात वर्ष की आयु में प्रायः उसने पाठशाला जाना शुरू किया होगा। यूनान में केवल धनी परिवारों के बालक ही स्कूल जा पाते थे। लड़कियों को घर पर ही उनकी माएं शिक्षा देती थीं।

यूनान के विद्यालय

अधिकांश यूनानी स्कूलों में बीस से भी कम बच्चे होते थे। लड़के मोम की परत लगी लकड़ी की तख्तियों पर एक नुकीली कलम से लिखते थे। वे अबेकस के सहायता से गणित सीखते थे। अबेकस में लकड़ी के फ्रेम में जड़े तारों पर लकड़ी की घुंडियां लगी होती हैं जिन्हें इधर उधर खिसका कर गणना की जाती है। अरस्तु ने शायद इतिहास की शिक्षा भी पाई होगी, और होमर की लम्बी कवितायें कंठस्थ की होंगी। उसे एथेंस के प्रसिद्ध नेता पेरिक्लेस (४९०-४२९ ई. पू.) के व्याख्यान भी पता थे।

चौदह वर्ष का होते-होते वह खेलों में भी रूचि लेने लगा होगा। अवश्य वह और उसके दोस्त वहां के खुले रेतीले मैदानों में खेलों का अभ्यास करते होंगे। वे कुश्ती लड़ते, दौड़ में हिस्सा लेते और भाला और डिस्कस फेंकने वाले खेल खेलते। उनमे से सबसे अच्छे खिलाडी ओलंपिक खेलों में भी भाग लेते, जिनका आयोजन देवताओं के राजा ज़ीउस के सम्मान में हर चार वर्षों में किया जाता था।

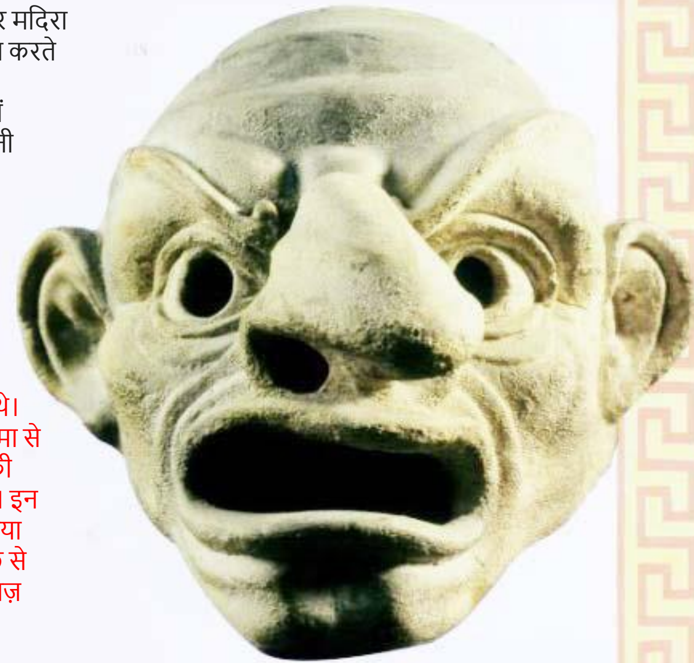


इस मूर्ति में एक खिलाडी को डिस्कस फेंकते हुए दिखाया गया है। यूनानी खिलाडी दौड़ लगाते समय या अन्य स्पर्धाओं में निर्वस्त्र ही रहते थे।

रंगमंच और मित्र

अधिकांश यूनानी लोगों को नाटक देखना बहुत पसंद था, और अवश्य ही अरस्तु ने भी ऐसा किया होगा। नाट्यगृह पहाड़ियों को काट कर बनाये जाते थे। दर्शक पत्थरों की बनी बेंचों पर बैठते थे, जो पहाड़ी पर नीचे से ऊपर तक बनी होती थीं, और पहाड़ी की तलहटी में रंगमंच होता था। चेहरों पर मुखौटे लगाए कलाकार भावुक, हास्यमय व अन्य अनेक प्रकार के नाटकों का मंचन किया करते थे।

बड़ा होने पर अरस्तु उन वयस्कों के संपर्क में आया होगा जो उसके घर पर भोज आदि के लिएआया करते थे। स्त्रियां और पुरुष अलग अलग भोजन करते थे। पुरुष आरामदेह कुर्सियों पर विराजमान होकर मदिरा पान करते, वार्तालाप करते और दासों द्वारा लायी गयी थालियों में सजे भोजन को अपनी उँगलियों से खाते।



यूनान के रंगमंच के कलाकार मुखौटे पहनते थे। मुखौटे पर दर्शाई भाव-भंगिमा से पात्र की आयु और मन की भावनाओं का ज्ञान होता था। इन मुखौटों का मुख बड़ा बनाया जाता था ताकि उसके पीछे से बोलते कलाकार की आवाज़ साफ़ सुनाई दे सके।

दास और स्वतंत्र व्यक्ति

यूनान की आबादी में लगभग एक चौथाई दासों की थी। ये दास प्रायः युद्ध में पकडे हुए बंदी होते थे। नगर के बाजार में उनकी खरीद-फरोख्त होती और उन्हें घर के कामों के लिए प्रयोग किया जाता था। अधिकांश दासों के साथ मानवतापूर्ण व्यवहार किया जाता था। कुछ दासों को स्वतंत्र भी कर दिया जाता था, जिनमे से कुछ धनी व्यापारी भी बन जाते थे।

ज्ञान की खोज

३६७ ई. पू. में १७ वर्ष की अवस्था में अरस्तु दक्षिण में बसे एथेंस शहर के विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने गया। इस विद्यालय के संचालक थे यूनान के सबसे प्रसिद्ध शिक्षक, प्लेटो।

एथेंस का जीवन

एथेंस तब यूनान का सबसे बड़ा और सुन्दर शहर था। यह नगर एक्रोपोलिस नाम की पहाड़ी के निकट बसा था, जिसके शिखर पर स्थित था पार्थेनन का दमकता हुआ मंदिर। इस नगर में लगभग ढाई लाख लोग रहते थे। अरस्तु ने शायद यह महसूस किया होगा कि वहां के लोग अपना अधिकांश समय राजनीति की बातें करने में बिताते थे। एथेंस के प्रसिद्ध शासक पेरिक्लेस ने एक बार कहा था कि जिसे राजनीति में रूचि न हो ऐसे व्यक्ति का एथेंस में भला क्या काम।

एक लोकतान्त्रिक नगर

एथेंस का शासन किसी राजा द्वारा नहीं किया जाता था। वहां लोकतंत्र कायम था, और वहां के क़ानून वहां के स्वतंत्र नागरिकों द्वारा बनाये जाते थे। यदि कोई राजनेता नागरिकों को नापसंद होता तो वे उसे मतदान के द्वारा पद से हटा सकते थे। ऐसा होने पर उस राजनेता को देशनिकाला दे दिया जाता था।



इस चित्र में मिट्टी के बर्तनों के टूटे टुकड़े दर्शाये गए हैं, जिन्हें "ऑस्ट्राका" कहते थे। इन टुकड़ों पर राजनेताओं का नाम लिख कर एथेंस के नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग करते थे।

एक मेधावी छात्र

प्लेटो ने शीघ्र ही जान लिया कि अरस्तु उसका सबसे मेधावी छात्र था। अवश्य ही दोनों के बीच लम्बा तर्क-वितर्क हुआ होगा। प्लेटो ने कहा कि एक मेज़ का चित्र मेज़ तो नहीं हो सकता। अरस्तु जानना चाहता था कि मेज़ बनाई कैसे जाती है। प्लेटो व्यक्ति की आत्मा के बारे में जानना चाहता था, लेकिन अरस्तु को केवल इस बात में रुचि थी कि व्यक्ति के उदर में पाचन क्रिया कैसे काम करती है।

निश्चय ही प्लेटो ने अपने नौजवान मित्र को अच्छी सीख दी। उसने अवश्य अरस्तु को बताया होगा कि चतुर व बुद्धिमान लोगों के बहुत से शत्रु बन जाते हैं। प्लेटो के अपने गुरु सुकरात पर लोगों ने देवताओं के अपमान का आरोप लगाया था, जिसके बाद उसे मृत्युदंड दे दिया गया था।



१५१० ईस्वी के इस तैलचित्र में इटली के चित्रकार रफाएल ने प्लेटो (बाएं) और अरस्तु (दाहिने) को साथ चलते व बातचीत करते दर्शाया है।

प्लेटो

प्लेटो का असली नाम अरिस्टोक्लेस था। "प्लेटो" उसका उपनाम था, जिसका अर्थ होता है "चौड़े कन्धों वाला"। सुकरात (४५९ - ३९९ ई.पू.) को मृत्युदंड दिए जाने के बाद क्रोध व कुंठावश प्लेटो ने एथेंस शहर ही छोड़ दिया था। फिर ३८७ ई. पू. में वह एथेंस लौटा, और एक पेड़ों के झुरमुट के मध्य उसने अपने विद्यापीठ की शुरुआत की। यह विद्यापीठ एक शुरूआती विश्वविद्यालय की तरह था। जब अरस्तु उसके पास पढ़ने आया तो प्लेटो की आयु ६० वर्ष की थी।

उसका अपना विद्यापीठ

अरस्तु ने बीस वर्षों तक प्लेटो के विद्यापीठ में अध्ययन व कार्य किया, और इस दौरान दोनों बहुत अच्छे मित्र बन गए। क्या उचित है और क्या अनुचित, इस प्रश्न के विश्लेषण में प्लेटो की बहुत रुचि थी। लेकिन अरस्तु अधिक व्यावहारिक था। उसे प्राकृतिक संसार और उसकी कार्य-प्रणाली में अधिक रुचि थी।

एक घुमक्कड़ छात्र

जब वह विद्यापीठ में नहीं होता, तो अरस्तु यूनान के विभिन्न हिस्सों में घूमता फिरता रहता था। अधिकतर वह पैदल ही यात्रा करता था। इन यात्राओं के दौरान वह पशु-पक्षियों और पौधों का अध्ययन करता, लोगों की बातें सुनता, और आकाश के सितारों और बदलती ऋतुओं को ध्यान-पूर्वक देखता-समझता था।

विद्यापीठ से प्रस्थान

लगभग ३७४ ई.पू. में ८१ वर्ष की अवस्था में प्लेटो की मृत्यु हो गई। अरस्तु ने लिखा था कि कैसे प्लेटो ने अपने जीवन से यह दर्शाया था कि "जीवन में अच्छा होना ही सुखी होने की कुंजी है"। अब विद्यापीठ का सञ्चालन प्लेट के भतीजे स्पेसिप्पस को करना था। अरस्तु अब ३७ वर्ष का हो चुका था, और उसने निश्चय किया अब उसे अपना स्वयं का विद्यापीठ प्रारम्भ करना चाहिए।



यह रोमन भित्ति-चित्र प्लेटो के विद्यापीठ के एक दृश्य को दिखलाता है।

अरस्तु एजियन सागर को पार करके एशिया माइनर, यानी जहाँ आज तुर्किस्तान है, पहुंचा, जहाँ उसके दो पुराने मित्र असूस नाम के नगर में रहते थे। वहां का स्थानीय शासक था हर्मियस , जो एक सेनानी रह चुका था, और जिसने सोने की खदानों से बहुत संपत्ति अर्जित की थी। उसके पास विद्या के प्रसार के लिए पर्याप्त धन था, और इसलिए उसने असूस में एक नया विद्यापीठ खोलने के लिए अरस्तु को आमंत्रित किया था।

हर्मियस न केवल अरस्तु का मित्र व छात्र बन गया, जल्दी ही अरस्तु का विवाह हर्मियस की गोद ली हुई बेटी पीथियस से हो गया, और वह उसका श्वसुर भी बन गया। नव-दम्पति को कुछ समय बाद ही एक पुत्री हुई, जिसका नाम भी पीथियस ही रखा गया।

अरस्तु के विवाह के बाद अवश्य एक भोज का आयोजन किया गया होगा। ये सेवक भोज के लिए पकवान ले जा रहे हैं।



यूनानी समाज में विवाह

यूनान में कन्याओं का विवाह चौदह या पंद्रह वर्ष की आयु में हो जाता था, लेकिन पुरुषों का विवाह अरस्तु की ही भांति अक्सर देर से होता था। शायद उसे प्लेटो की यह चेतावनी याद रही होगी कि एक पुरुष के लिए अविवाहित रहना एक अपराध के समान है। अधिकांश यूनानी पुरुषों की ही भांति अधिकांश समय अरस्तु अपनी पत्नी से अलग ही रहा।

लेस्बोस का द्वीप

अपनी पहली पत्नी की मृत्यु के बाद अरस्तु ने पुनः विवाह कर लिया। उसकी दूसरी पत्नी का नाम था हेरफिलिस, और दोनों का निकोमाचुस नाम का पुत्र हुआ।

आसुस आने के तीन वर्ष बाद अरस्तु ने लेस्बोस नामक द्वीप पर कुछ समय बिताने का निश्चय किया। एजियन सागर में अनेकों छोटे-छोटे जहाज़ चलते थे, जिनमे से एक पर उसने यह छोटी से समुद्री यात्रा पूरी की।

द्वीप पर प्रकृति-विज्ञानी

यूनान की सर्वश्रेष्ठ कवियित्री सैफो लेस्बोस की ही रहने वाली थी। अरस्तु को कविता से लगाव था, और श्रेष्ठ कविता कैसे लिखी जानी चाहिए, वह इस पर चिंतन करता रहता था। लेकिन वर्तमान में उसकी रुचि प्रमुख रूप से प्रकृति-विज्ञान में थी। दो वर्ष तक उसने एक प्रकृति-वैज्ञानिक के नाते उस द्वीप का भ्रमण किया।

समुद्री जीवों का अध्ययन

लेस्बोस द्वीप पर अरस्तु ने जो किया उसे विज्ञान की भाषा में क्षेत्र कार्य (field work) कहा जाता है। उसने पक्षियों और कीड़े-मकोड़ों का अध्ययन किया, समुद्र तटों का भ्रमण करते हुए सीपियाँ एकत्र कीं, समुद्री जीवों को देखा-भाला। जो कुछ भी उसने देखा उसका विवरण अपने पास लिख कर रख लिया।



थेरा द्वीप (जिसे आजकल सेंटोरिनी कहते हैं) का यह भित्ति-चित्र एक मछुआरे और उसके द्वारा पकड़ी गई मछलियों को दर्शाता है।

अरस्तु का मानना था कि यदि वैज्ञानिक प्राकृतिक संसार को ठीक से समझना चाहते हैं, तो उन्हें प्रत्येक वस्तु का बारीकी से अध्ययन करना चाहिए। एक वैज्ञानिक को दूसरों की बताई बातों पर विश्वास न करके केवल आँखों देखी को ही मानना चाहिए। वह जीवन-मृत्यु और आत्मा के विषय में भी अक्सर चिंतन करता था। क्या आत्मा शरीर से अलग है, जैसा कि प्लेटो का मानना था, या फिर शरीर और आत्मा के बीच कोई गहरा रहस्यमय सम्बन्ध था?



यूनान के व्यापारिक जहाज़ों में एक पाल हुआ करता था। युद्ध-पोतों में भी एक ही पाल होता था, लेकिन उन्हें लम्बी पतवारों से खेने की व्यवस्था भी होती थी।

समुद्र में यूनानी

अपनी समुद्री यात्राओं के दौरान अरस्तु ने अवश्य ही जहाज़ी जीवन के बारे में बहुत कुछ सीखा होगा। यूनानी लोग लकड़ी के बने जहाज़ों में यात्रा करते थे, जिनमें एक मस्तूल और चौकोर पाल लगा होता था। अन्य समुद्री यात्रियों की भांति ही अरस्तु ने भी अपनी बहुमूल्य वस्तुएं एक थैले में भर कर अपने गले में लटकाई होंगी, ताकि समुद्र में डूबने की स्थिति में जिसे भी उसका शव मिले वह उसके अंतिम संस्कार का खर्च दे सके।

एक शाही बुलावा

अरस्तु की इस सुखमय शोध यात्रा का ३४२ ई. पू. में अचानक एक झटके में अंत हो गया, जब हर्मियस को मैसेडोनिया के फिलिप का एक सन्देश प्राप्त हुआ।

फिलिप की योजना

३५९ ई. पू. में अपने बड़े भाइयों, एलेग्जेंडर और पेर्दिकास, की मृत्यु के बाद फिलिप मैसेडोनिया का राजा बन गया। वह पूरे यूनान पर अपना एक-छत्र राज्य स्थापित करना चाहता था, और उसकी इच्छा थी कि फारस के विरुद्ध युद्ध में हर्मियस उसका सहयोग करे। इस युद्ध के द्वारा फिलिप पूरे यूनान को अपने नेतृत्व में एकजुट करना चाहता था।

फिलिप की एक व्यक्तिगत इच्छा भी थी। वह और उसकी रानी ओलिम्पियस का एक पुत्र था, एलेग्जेंडर या सिकंदर, जिसके लिए उन्हें एक शिक्षक की आवश्यकता थी। हर्मियस ने इसके लिए आसुस के सबसे बुद्धिमान शिक्षक, यानि अरस्तु का नाम सुझाया था। फिलिप ने अरस्तु को पेल्ला में उसके दरबार में आकर उसके पुत्र को शिक्षा देने के लिए आमंत्रित किया। यह एक ऐसा बुलावा था जिसके लिए अरस्तु इंकार नहीं कर सकता था।



इस चित्रित तश्तरी पर यूनानी योद्धा को दिखाया गया है, जिन्हें होप्लाइट कहते थे। होप्लाइट योद्धा धातु और चमड़े से बना कवच पहनते थे, हेलमेट लगाते थे, और भाला व ढाल धारण करते थे।

पेल्ला की यात्रा

फिर अरस्तु ने अपनी एकत्र की हुई सीपियाँ, फूल-पत्तियां, समुद्री जीवों के अवशेष, व अपनी यात्राओं के लिखित विवरण, सबका बोरिया बिस्तर बाँधा, और एक बार फिर अपने परिवार व सेवकों के साथ एजियन सागर को पार करने चला। अपनी यात्रा का अंतिम भाग उन्हें पैदल ही पूरा करना पड़ा। एथेंस जैसे महानगर में लम्बा समय बिताने के बाद शायद उसे पेल्ला शहर बहुत छोटा नज़र आया होगा, लेकिन वहां अरस्तु का भव्य स्वागत हुआ।

जब अरस्तु उससे मिला तब राजकुमार एलेग्जेंडर की आयु तेरह वर्ष की थी। फिलिप चाहता था कि उसके पुत्र को शीघ्र से शीघ्र सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त हो। युद्ध प्रारम्भ होने को था, और एलेग्जेंडर को अपने पिता के साथ युद्ध भूमि में जाना होगा।



मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने राजा फिलिप के चेहरे का यह मॉडल तैयार किया, जो कि उसके मकबरे से प्राप्त उसकी खोपड़ी पर आधारित है। उसकी दाहिनी आँख पर तीर के घाव का निशान था।

शिक्षक अरस्तु

अरस्तु का मत था कि शिक्षा का उद्देश्य हर बालक को एक श्रेष्ठ नागरिक बनाना है। सबसे पहले बालकों को अपने शरीर को स्वस्थ व चुस्त-दुरुस्त रखना सीखना चाहिए। उसके बाद उन्हें पढ़ना, लिखना, संगीत, कला व गणित की शिक्षा लेनी चाहिए। बड़े छात्रों को साहित्य व भूगोल का अध्ययन करना चाहिए, और फिर अन्य सभी विषयों का।

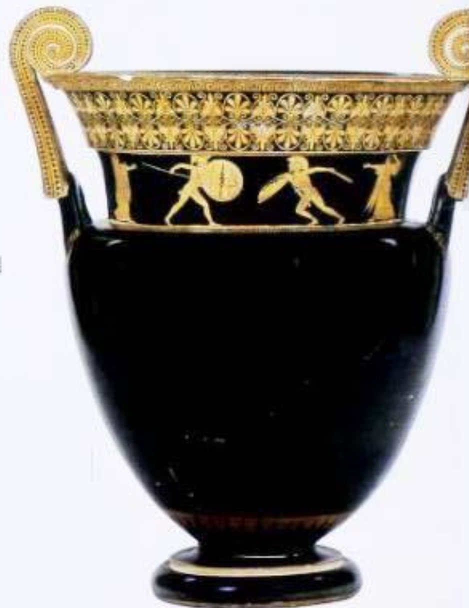
एलेग्जेंडर महान की शिक्षा

अगले तीन वर्षों तक उस किशोरवय राजकुमार ने अपने अधेड़ शिक्षक से शिक्षा ग्रहण की। अरस्तु ने पाया कि एलेग्जेंडर बड़ा जिज्ञासु छात्र था और उसे दर्शन, चिकित्सा व इतिहास में विशेष रूचि थी।

अरस्तु और एलेग्जेंडर

अंततः शिक्षक का कार्य पूरा हुआ। फिलिप जब युद्ध के लिए गया तो मकदूनिया का राज्यभार अपने पुत्र एलेग्जेंडर को सौंप गया। इस प्रकार एलेग्जेंडर एक योद्धा बन गया। ३३८ ई. पू. में चैरोनी के युद्ध में फिलिप की विजय के बाद पूरे यूनान पर मकदूनिया का एकछत्र राज्य हो गया।

एथेंस के लोगों को भय था कि नया शासक उनकी स्वतंत्रता छीन लेगा। फिलिप ग्रीक भाषा बोलने में निपुण नहीं था, इसलिए एथेंस निवासी उसे असभ्य मानते थे। लेकिन राजा अरस्तु का सम्मान करता था। शायद अरस्तु ने ही एथेंस के साथ हुई संधि का मसौदा लिखा होगा, जिसमें सभी यूनान निवासियों से फारस के विरुद्ध युद्ध करने का आग्रह किया गया था, क्योंकि उसके मित्र हर्मियस को फारस के सैनिकों ने बंदी बना कर मार डाला था।



होमर का काव्यग्रंथ "इलियड" "ट्रोजन युद्ध" की कथा का वर्णन करता है। इस फूलदान पर बना चित्र उस कहानी के एक नायक एकिलीज़ द्वारा अमेज़न की रानी पेंथेसिला की हत्या के दृष्य को दर्शाता है।

भावी विश्व-विजेता को सलाह

हर्मियस ने बड़ी वीरता के साथ वीरगति पाई थी, और अरस्तु ने उसकी याद में एक कविता लिखी, जिसमें उसकी तुलना एकिलीज़ से की गई थी। शायद अरस्तु ने ही अपने मित्र की मौत का बदला लेने के लिए सिकंदर को प्रेरित किया होगा कि वह फारस के राजा को सत्ता से हटाये।

यह कहना मुश्किल है कि सिकंदर ने अरस्तु की शिक्षा पर कितना अमल किया। यद्यपि अरस्तु का मानना था कि यूनान के नगर-राज्यों को स्वतंत्र होना चाहिए, सिकंदर ने एक सर्व-शक्तिमान शासक के रूप में पूरे साम्राज्य पर राज किया। अरस्तु मानता था कि यूनानी तौर-तरीके असभ्य लोगों के मुकाबले बहुत बेहतर हैं, लेकिन सिकंदर पूर्ववर्ती लोगों के कई रीति-रिवाज़ों का प्रशंसक था, और उसने उन्हें अपनाया भी।



यह संगमरमर की प्रतिमा सिकंदर की है, जो अरस्तु का सबसे प्रसिद्ध छात्र था।

यूनानियों की युद्ध शैली

अधिकांश यूनानी योद्धा पैदल ही युद्ध करते थे, और "। उनके हथियारों में होते थे, लम्बा भाला, फेंकने वाला भाला, कांसे की तलवार, और तीर-कमान। मक़दूनिया की सेना के बहुत से फैलेंक्स" कहे जाने वाले प्रगाढ़ समूह में चलते थेसैनिक कुशल घुड़सवार भी थे।

युद्ध और शांति

लगभग ३३९ ई. पू. में अरस्तु का परिवार अपने नगर स्तागिरा को वापस आ गया। उसे कदाचित पेला से दूर चले जाने में प्रसन्नता ही हुई होगी, क्योंकि वहां राज-दरबार में समस्याएं पनप रही थीं।

फिलिप का देहांत

३३७ ई. पू. में राजा फिलिप ने रानी ओलम्पियस को तलाक़ देकर दूसरा विवाह कर लिया। इस बात को लेकर फिलिप और सिकंदर के बीच बहुत कलह हो गई। फिर ३३६ ई.पू. में फिलिप की हत्या हो गई। शायद राजघराने के किसी नवयुवक ने ऐसा किया था, लेकिन कुछ लोगों ने सिकंदर पर अपने पिता की हत्या की साज़िश का आरोप लगाया। पर अरस्तु ऐसा नहीं मानता था। अपनी पुस्तक "राजनीति" में उसने फिलिप की हत्या का ज़िक्र इस प्रकार किया है जैसे किसी व्यक्ति ने निजी शत्रुता के कारण शासक को मार डाला हो।



इस रोमन भित्ति-चित्र में सिकंदर (बाईं ओर घोड़े पर सवार) को फारस के राजा दारियस तृतीय के विरूद्ध युद्ध में सेना का नेतृत्व करते हुए दर्शाया गया है, जिसमे उसने विजयश्री प्राप्त की थी।



एथेंस का नगर यूनान के लोकतंत्र का केंद्रबिंदु था। यद्यपि अरस्तु इस नगर का एक सम्मानित शिक्षक था, लेकिन अन्य गणमान्य व्यक्तियों की तरह वहां उसके कुछ शत्रु भी थे।

सिकंदर - युद्ध भूमि की ओर

३३५ ई. पू. में अरस्तु एथेंस वापस लौट आया। तब वह लगभग ५० वर्ष का था। एक नए शासक के रूप में सिकंदर ने थेबेस शहर के बाग़ियों को तो कुचल डाला, पर एथेंस को बख्श दिया। डेल्फी शहर के एक ज्योतिषी ने उसे बताया था कि कोई भी उसे परास्त नहीं कर सकेगा। ३३४ ई. पू. में ३५००० सैनिकों के साथ उसने एशिया पर विजय प्राप्त करने के लिए पूर्व की ओर कूच किया।

एथेंस को वापसी

एथेंस में मकदूनिया के जनरल एंटीपैटर, जो सिकंदर की अनुपस्थिति में राजकाज संभाल रहा था, के साथ अरस्तु की अच्छी मित्रता थी। जो लोग सिकंदर के साथ एशिया गए थे, उनमे से एक था अरस्तु का भतीजा कालिस्थेनेस। ३२८ ई. पू. में सिकंदर ने कालिस्थेनेस पर राजद्रोह का आरोप लगा कर उसे मृत्यु दंड दे दिया। इससे अरस्तु बहुत क्षुब्ध हो गया।

नगर में निवास

नगर का जीवन अरस्तु को पसंद था। उसे एथेंस के पुस्तक बाज़ारों में घूमना अच्छा लगता था, जहाँ नाटकों, कविताओं और व्याख्यानों की पुस्तकें बिकती थीं। यह

जीवंत नगर नए विचारों से भरपूर था। प्लेटो ने एक काल्पनिक आदर्श नगर के बारे में लिखा था, परन्तु अरस्तु का मानना था कि वास्तविक सांसारिक नगर ही मानव सभ्यता की ऊंचाईयों को दर्शाते थे।

लायसियम

अरस्तु के जीवन के अंतिम १३ वर्ष (३३५ - ३२२ ई. पू.) एथेंस में अपने विद्यालय को स्थापित करने में व्यतीत हुए। इस विद्यालय का नाम था लायसियम। इसके छात्र नगर के समीप वृक्षों के एक झुरमुट के नीचे एकत्र होते थे। अरस्तु की अधिकांश कृतियां जो वर्तमान में बची हुई हैं, वे इन्हीं झुरमुटों के तले टहलते हुए अरस्तु द्वारा अपने छात्रों को दिए गए, और उनके द्वारा लिपिबद्ध किये गए, उसके व्याख्यान हैं। इस विद्यालय में छात्र और शिक्षक साथ-साथ ही भोजन करते थे। वे अनेक विषयों पर वाद-प्रतिवाद करते और उस पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ते, जिसकी स्थापना सिकंदर द्वारा दी गई धनराशि से हुई थी।



एक महान व्यक्ति

अरस्तु अब एक महान व्यक्ति था जो अन्य अनेक महान व्यक्तियों के नगर में रहता था। उसकी मूर्तियों को देख कर लगता है कि अवश्य यह ऐसा कोई व्यक्ति था जो सदैव राजनीति या साहित्य पर चर्चा के लिए तैयार रहता था, या फिर यह समझाने के लिए घोंघे के शरीर पर कवच क्यों होता है। वह धनवान था और अच्छे वस्त्र धारण करता था। उसे उम्दा पोशाकें और अंगूठियां पसंद थीं।

अरस्तु और उसके छात्र अधिकांश समय चलते-चलते वार्तालाप करने में व्यतीत करते थे, जैसा कि इस फूलदान पर अंकित दार्शनिकों को करते दिखाया गया है।

अरस्तु का देहांत

सिकंदर ने एक विशाल साम्राज्य पर विजय पताका फहरा दी थी, जो भारत तक फैला हुआ था। लेकिन ३२३ ई. पू. में अचानक बेबीलोन में उसकी मृत्यु हो गई। यूनानी समाज में एक भूचाल सा आ गया। जनरल एंटीपैटर को एथेंस से वापस बुला लिया गया। मकदूनिया का मित्र होने के नाते अरस्तु एक घृणा का पात्र बन गया। उसे भय था कि कहीं उसकी हत्या न कर दी जाय।

अरस्तु और उसकी पत्नी भाग कर उबोया द्वीप पर स्थित चालसिस नगर चले गए। उसने अपनी वसीयत बनाई, जिसमे लिखा कि उसकी मृत्यु के बाद उसके दासों को स्वतंत्र कर दिया जाए, और उसके नगर स्तागीरा में देवता ज़ीउस और देवी एथेना की प्रतिमाएं स्थापित की जाएँ। ३२२ ई. पू. में बासठ वर्ष की अवस्था में उसे उदर में पीड़ा शुरू हुई और उसका देहांत हो गया।



उबोया का द्वीप जो यूनान के पूर्वी तट के समीप स्थित है। शायद अरस्तु को यहीं दफनाया गया होगा।

अरस्तु की समाधि ?

अरस्तु की माँ का जन्म उबोया द्वीप पर हुआ था। १८९६ में वहां काम कर रहे पुरातत्व-वेत्ताओं को एक कब्र मिली जिसमे एक खोपड़ी और स्वर्ण के बने सात पट्टे थे (जिन्हें सर पर बाँधा जाता था)। कुछ लेखन सामग्री और मिट्टी की एक प्रतिमा भी मिली। संभव है कि यह अरस्तु की ही कब्र हो, या इसका उसके परिवार से कोई सम्बन्ध हो।

अरस्तु की विश्व को देन

अरस्तु से पहले यूनानियों ने जो चिंतन मनन किया था, उसमें अरस्तु ने अपना स्वयं का चिंतन भी जोड़ा और उसे विश्व के लिए छोड़ गया। उसकी अंतिम कृति "दर्शन" के कुछ भाग ही अब उपलब्ध हैं। लेकिन कदाचित इस पुस्तक ने दर्शन-शास्त्र की किसी भी अन्य पुस्तक के मुकाबले पाश्चात्य चिंतन पर अधिक गहरी छाप छोड़ी है। अरस्तु की दूसरी पुस्तकों के शीर्षक बतलाते हैं कि उसकी रुचियों का क्षेत्र कितना विस्तृत था। "भौतिकी" पुस्तक का विषय है कि वस्तुओं में बदलाव क्यों आता है। "आत्मा पर" में शरीर और आत्मा की विवेचना की गई है। "मेटाफिजिक्स" में धार्मिक चर्चा है, "पोएटिक्स" में साहित्य की, और "पॉलिटिक्स" में राजतन्त्र की।

हर विषय में रूचि

अरस्तु को प्रत्येक विषय में रुचि थी। उसने ओलिंपिक खेलों के विजेताओं की सूचियां बनाई थीं, और अपने पसंदीदा नाटकों की भी। यूनान के नगरों में कितने प्रकार की शासन प्रणालियाँ चलती हैं, इसकी भी उसने सूची बनाई थी। उसने "असभ्य लोगों के रीति-रिवाज़" पर भी लिखा, और प्रकृति विज्ञान का एक ज्ञान-कोष भी रच डाला।

उसने जो कुछ देखा-समझा, उसके आधार पर प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास किया। भविष्य के वैज्ञानिकों के लिए यह एक महत्वपूर्ण सन्देश था।

रोम में स्थित इस प्रतिमा में अरस्तु को चिंतन करते हुए दिखाया गया है। उसकी लिखी सैकड़ों पुस्तकों में से अब केवल ४७ ही उपलब्ध हैं।

अरस्तु के विचार कैसे जीवित रहे

अरस्तु के देहांत के बाद भी लायसियम विद्यालय चलता रहा। एक किंवदंती के अनुसार अरस्तु की सारी पुस्तकें उसके एक मित्र पास पहुँच गईं, जिसने उन्हें एक अँधेरी कोठरी में बंद कर दिया। लायसियम के अंतिम प्रधानाचार्य एन्ड्रोनिकस ने इन पुस्तकों को वहां से आजाद कराया और उन्हें प्रकाशित करवाया।

रोमन लोग अरस्तु के बड़े प्रशंसक थे, लेकिन ५०० से ११०० ईस्वी के बीच यूरोप के लोग उसे लगभग भूल चुके थे। फिर १२०४ में यूरोप के धर्मयोद्धा लड़ाकों ने कुस्तुन्तुनिया (आज का इस्तम्बूल) पर कब्ज़ा कर लिया, और वहां से अरस्तु की पुस्तकों को यूरोप में लेकर आये। इस प्रकार पश्चिम ने अरस्तु को पुनः खोज निकाला।

काफी समय तक अरस्तु के विचार वैज्ञानिक खोज का आधार बने रहे। रंगमंच के विषय में तो उसकी सोच नाट्य-लेखन की नियमावली ही बन गई। आज अरस्तु का महत्त्व पहले जैसा तो नहीं है, लेकिन उसके विचार और उसकी सोच पश्चिम के लोगों की सोच और कार्य-पद्धति के मूल में आज भी मौजूद है।



अरस्तु के विचारों का अरब देशों में भी अध्ययन किया गया। तुर्की की तेरहवीं सदी की एक पुस्तक से लिए गए इस चित्र में अरस्तु को अपने छात्रों को विज्ञान की शिक्षा देते दर्शाया गया है।